आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका।

साधक-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

वर्ष : 02 | अंक : 04 | जुलाई 2012 | विक्रम संवत् 2069

आशीर्वाद
प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी)

★

सम्पादक
कैलाश चन्द्र श्रीमाली

★

संयोजक
विनीत श्रीमाली

★

प्रकाशक एवं स्वामित्व
कैलाश चन्द्र श्रीमाली
प्राचीन मंत्र-यंत्र विज्ञान

★

मुद्रक
'सुदर्शन प्रिन्टर्स'
487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड, नई दिल्ली-87
से मुद्रित

★

कार्यालय :
प्राचीन मंत्र-यंत्र विज्ञान
1-सी पंचवटी कॉलोनी,
रातानाडा, जोधपुर
से प्रकाशित

मूल्य भारत में
एक प्रति : 24/-
वार्षिक : 310/-

सम्पादक की कलम से ....

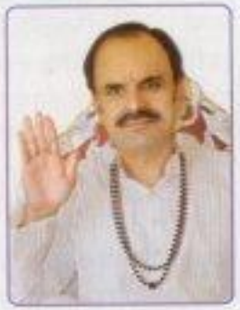

अपनो से अपनी बात

प्रिय आत्मन,

शुभाशीर्वाद!

सद्गुरुदेव के दिव्यतम तेजोमय स्वामी सच्चिदानन्दजी महाराज के सान्निध्य में सैकड़ो-सैकड़ो साधकों ने सप्तपुरी बद्रीनाथ धाम में आकर अपने जीवन को अमृतमय और आनन्द से सरोबार किया। ११ हजार फुट की ऊंचाई पर अलकनन्दा की तीव्र पवित्र धारा में श्रेष्ठतम दीक्षाऐं, सरस्वती उद्गम स्थल पर कपाल कुण्डला क्रिया और मंदिर प्रागण में विशेष रूप से रुद्राभिषेक और नवग्रह शान्ति वेदोमंत्रोचारण से युक्त यज्ञ व सिद्धाश्रम गमन दीक्षा में सभी साधकों ने भाग लेकर इन पांच दिवसों में साक्षीभूत रूप में भगवान नारायण और माता लक्ष्मी को आत्मसात किया। सही अर्थों में बद्रीनाथ धाम आकर साधकों ने यह पूर्ण रूप से एहसास किया कि ज्ञानी, साधनारत अलौकिक गुरु के सानिध्य में ही योग, ध्यान और तपस्या से जीवन श्रेष्ठतम बनता है।

गुरुदेव ने हरिद्वार व बद्रीनाथ में ओजस्वी वाणी में साधकों से आह्वान किया कि उठो जागो और आगे बढ़ो और आप भी महाशक्ति के पुंज है। आपके भीतर महान व्यक्तित्व छिपा हुआ है आप भी महान बन सकते है। आपके अन्दर सोई हुई महान प्रतिभा और शक्ति जो अभी तक व्यर्थ पड़ी हुई है वह जाग उठे। दुनिया में वे ही गुरु महान होते है जो ऐसा मार्गदर्शन ही नहीं देते वरन् सदैव अपने शिष्यों और साधकों के साथ निरन्तर-निरन्तर सहयोगी रहते है।

गुरु साधक के लिए सूरज के समान है जो सोये हुए को जगाता है वह पवन की भांति है जो जीवन में सुगन्धमय स्थितियाँ लाते है तथा गुरु

पंछी की तरह मधुर आत्मिक वाणी में ज्ञान धारा के माध्यम से चेतना प्रदान करते है मनुष्य स्वयं अपने आप को पहचान सके, हमारे व्यक्तित्व का सही विकास तभी सम्भव है जब श्रेष्ट गुरु के निरन्तर सरंक्षण में रहे क्योंकि गुरु ही साधक की योग्यता साहस और अन्दर की शक्तियां को न केवल क्रियाशील करता है। बल्कि अनुवरत जाग्रत भी बनाये रखता है। ऐसी हर स्थिति में संघर्ष करने में ही नहीं वरन् पूर्ण-पूर्ण सफलता अपने भक्तों को प्रदान करने के लिए तत्पर रहता है।

हरिद्वार से बद्रीनाथ की ४३० किमी. की दुर्गम यात्रा लगभग १४ घंटों में पूर्ण की पांच हजार से अधिक साधक शिष्य-शिष्याऐं, बालक-बालिकाऐं और बुजुर्ग साधकों ने शिविर में कड़ाके की ठण्ड और पल-पल बदलते धूप-वर्षा और बर्फबारी में बहुत आनन्द व उत्साह से अपने आप को सरोबार किया। पांच दिवसीय शिविर में सद्गुरुदेव की पूर्ण कृपा और वरद आशीर्वाद के फलस्वरूप शारीरिक-मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहे रोमांचमय और आनन्दमय यात्रा रही शिविर में भी सभी साधकों ने प्रत्येक साधना और दीक्षा में बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

गुरु-शिष्य का रिश्ता देहगत न होकर भावों और विचारों का होता है और भावों-विचारों के अनुरूप ही जीवन में स्थितियां निर्मित होती है। दिव्यतम मन्जुल महोत्सव में कार्यकर्ताओं और आत्मिक सहयोगियों ने जो सेवा प्रदान की और उसी फलस्वरूप यह साधनात्मक आयोजन प्रत्येक साधक के जीवन में श्रेष्ठतम स्थितियों को प्राप्त करने के लिए मील का पत्थर साबित होगी। ऐसे कार्यकर्ता और सहयोगी साधुवाद के पात्र है।

आपका अपना
कैलाश चन्द्र श्रीमाली

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस ''प्राचीन मंत्र-यंत्र विज्ञान'' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम तथा तथ्य मिल जाय तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते है, अत उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर-न्यायालय ही मान्य होगा।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक ही से भी प्राप्त कर सकते है। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते है पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवाये। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 310/- है, यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके है, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझे, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वय की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते है, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों का समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सके। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर मंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हो) बताते है, वे ही देते है, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है।

आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होती है, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।